धर्म-दर्शन की रूप-रेखा

डॉ० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

Scanned with CamScanner

अत्याधक लाकाप्रय है।

(१) प्रारम्भिक धर्म (आदिम धर्म)
(Primitive religion)

विषय-प्रवेश

प्रारम्भिक धर्म अर्थात् आदिम धर्म जैसा कि इसके नाम से ही विदित है, प्राचीन काल के व्यक्तियों की धार्मिक भावना को प्रकाशित करता है। अशिक्षित एवं असभ्य मानव का धर्म होने के फलस्वरूप इस धर्म में, अन्धविश्वास, जादू, भ्रम की मात्रा अधिक है। प्रारंभिक धर्म को प्राचीन युग के मानव का धर्म समझना गलत होगा। प्रारंभिक धर्म का सही अर्थ होगा असभ्यकालीन युग का धर्म। यह धर्म वर्त्तमान युग में भी असभ्य लोगों एवं बच्चों में वर्त्तमान है। प्रोफेसर ब्राइटमैन ने प्रारंभिक धर्म के संबन्ध में यह कहा है "प्रारंभिक शब्द का प्रयोग यह निश्चित करता है मानो

Scanned with CamScanner

यह अत्यन्त ही प्राचीन एवं धर्म की पहली अवस्था हो। यह पूर्णतः सत्यनहीं है। धर्म की प्रारम्भिक अवस्था आधुनिक युग में भी विद्यमान रह सकती है।

प्रारम्भिक धर्म को प्रारम्भिक धर्म इसलिये कहा जाता है क्योंकि दूसरा शब्द इसका चित्र उपस्थित करने में असफल है। दूसरी बात यह है कि प्रारम्भिक धर्म प्राचीन काल के व्यक्तियों के धार्मिक विचारों का स्पष्टीकरण है। प्रारम्भिक धर्म को शाब्दिक अर्थ में समझना भ्रमात्मक है। प्रारम्भिक धर्म को जाति-सम्बन्धी धर्म (Tribal religion) भी कहा जाता है। प्राचीन काल के लोग दल बाँधकर रहा करते थे। प्रारम्भिक धर्म का विकास विभिन्न दलों में हुआ; इसलिये इस धार्मिक अवस्था को जातीय धर्म (Tribal religion) कहा जाता है। यह धर्म प्रारम्भिक धर्म का समानार्थक है। प्रारम्भिक धर्म को आदिम धर्म कहना प्रमाणसंगत है। प्रारम्भिक धर्म आदिम मनुष्य के धार्मिक व्यवहारों का अध्ययन करता है। उपर्युक्त विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि आदिम धर्म वह धर्म है जो अति प्राचीन है और जो आज भी अविकसित अवस्था में दीखता है।

प्रारम्भिक धर्म के विभिन्न रूप
(Forms of Primitive religion)

प्रारम्भिक धर्म पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो धर्म के विभिन्न रूप पाते हैं। यद्यपि प्रारम्भिक धर्म के विभिन्न रूपों की निश्चित संख्या निर्धारित करना कठिन है; फिर भी प्रारम्भिक धर्म के विभिन्न रूपों को व्यक्त करने का प्रयास धर्म-दर्शन में पाते हैं। प्रारम्भिक धर्म के मुख्य रूपों में निम्नलिखित रूपों की चर्चा करना परमावश्यक है—

(१) जीववाद (Animism)
(२) प्राणवाद (Spiritism)
(३) फीटिशवाद (Fetishism)
(४) मानावाद (Manaism)
(५ टोटमवाद (Totemism)

Scanned with CamScanner

द्वारा कुछ ऐसे साधन अपनाये गये थे जिनसे भूली हुई वस्तु साधारणतः प्राप्त हो जाती थी।

टोटमवाद (Totemism)

टोटमवाद एक सिद्धान्त है जो जाति तथा उसके पूर्वजों के बीच एक प्रकार की एकता अथा अपनापन का बोध कराता है। यह एक सामाजिक धारणा है। प्रोफेसर ब्राइटमैन ने कहा है "टोटेमिज्म समान रूप से पूर्णव्यापी न होकर दूर तक फैला हुआ था तथा सामाजिक प्रधानता से पूर्ण था।" यद्यपि टोटमवाद बहुत प्राचीन है। फिर भी इसे विश्वव्यापी नहीं कहा जा सकता है। यह अण्डमन द्वीपवासियों तथा दक्षिण अफ्रीका की झाड़ी जातियों (bush men) में नहीं दीखता है। टोटमवाद के मुख्य समर्थकों में रावर्टसन स्मिथ तथा जेवन्स का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके मतानुसार टोटमवाद सभी धर्मों का आदिरूप है और इसी से धर्म की उत्पत्ति हुई है। टोटेमिज्म में टोटम को पवित्र माना जाता है। टोटम पशुओं का एक वर्ग है जिसके साथ जाति का सम्बन्ध पाया जाता है। पशुओं को प्राचीन काल के लोग अपने पूर्वजों का प्रतीक मानते थे। मुख्यतः भालू,

---

1. Totemism...was not equally universal, but was very wide spread and socially important.

Brightman—A Philosophy of Religion (P. 32)

कौवा, बाघ, सर्प, बगुला, छिपकली टोटेमिज्म जैसी भावना का प्रतिनिधित्व करते थे। प्राचीनकाल के लोगों का ऐसा विश्वास था कि मेरे नसों में वही खून है जो उन पशुओं में संचालित हो रहा हैं। टोटमी की धारणा है कि हम सबों का सृजन एक सामान्य टोटम पशु से हुआ है। टोटमवाद में विश्वास करने वाले को टोटमी कहा जाता है। टोटम जातियाँ अपने-अपने वर्ग के टोटम पशु की प्रायः रक्षा भी करती हैं तथा उनसे संरक्षा की अपेक्षा महसूस करती है। इसलिए उन पशुओं के प्रति अपनापन का भाव रखना स्वाभाविक हो जाता है। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल के लोग वृक्ष की शाखा को भी टोटम का प्रतीक मानते थे तथा वे शाखाएँ भी उनके लिए पवित्र एवं उत्साहवर्द्धक थीं।

टोटम का सदस्य जो कौवा को अपने पूर्वज का प्रतीक मानता था; दूसरे सम्प्रदाय में ही शादी कर सकता था। प्रत्येक सम्प्रदाय का व्यक्ति एक सामान्य पूर्वज की सन्तान माना जाता था। इसलिए सम्प्रदाय के प्रति प्रत्येक व्यक्ति आपस में प्रेम, सहनशीलता, सहानुभूति का भाव व्यक्त करता था।

टोटम-पशु का मांस खाना निषेध था। साधारणतः प्राचीनकाल के लोग अपने सम्प्रदाय के पशुओं को नहीं खा सकते थे। परन्तु साल के अन्त में वे वार्षिकोत्सव मनाते थे और उस समय वे सम्प्रदाय के प्रतीक पशुओं को बलि देकर मांस का वितरण करते थे। अतः मांस का पान एक विशेष अवसर के लिए शुभ समझा जाता था। उस अवसर पर मांस पान कर वे अपने को अत्यन्त ही शक्तिशाली महसूस करते थे। उस अवसर पर पशुओं का निपटारा करने में वे सुगमता का अनुभव करते थे। फ्रायड का विचार है कि प्राचीन काल के लोगों को अपने पूर्वजों के प्रति प्रेम एवं घृणा की भावना थी। वार्षिकोत्सव के अवसर पर मांस का पानकर वे अपने पूर्वजों के प्रति घृणा का प्रदर्शन करते थे। जब टोटम पशु की मृत्यु होती थी तो आदिम मनुष्य उसे गाड़ दिया करते थे। उनकी मृत्यु के समय वे खेद प्रकट करते थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् वे उसी प्रकार आँसू बहाते थे जिस प्रकार जाति के सदस्य की मृत्यु पर आँसू बहाते थे।

जो लोग पौधों को टोटम का प्रतीक मानते थे वे भी साल के अन्त में वार्षिकोत्सव मनाते थे। वे वृक्ष की शाखाओं को तोड़ अपने हाथों में लेकर एक ऐसी जगह एकत्र होते थे जहाँ उनके पूर्वज गाड़े गये थे। वह स्थान, जहाँ उनके पूर्वज रखे गये थे आदर का पात्र हो जाता था। टोटम की पूजा नहीं की जाती थी इसलिए कुछ लोगों ने इसे धार्मिक वस्तु न मानकर सामाजिक वस्तु माना है उनके अनुसार टोटेमिज्म् को धर्म कहना अनुचित है। प्रो० गैलवे ने कहा है कि "टोटेमिज्म् धर्म न होकर सामाजिक रीति है।"[1]

इसमें कोई सन्देह नहीं किया जा सकता है कि टोटमवाद एक सामाजिक व्यवस्था है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि एक टोटमी को अपने वर्ग के टोटमी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध कायम करने की अनुमति नहीं है। अन्य गोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध की

---

1. Totemism is a social custom rather than a religion. Galloway —Philosophy of Religion (P. 2.)

Scanned with CamScanner

कायम करने के कारण ही टोटमवाद समाज व्यवस्था का चित्र उपस्थित करता है। परन्तु इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि टोटमवाद धर्म व्यवस्था नहीं है। इसके विपरीत टोटमवाद के सिंहावलोकन से यह प्रमाणित होता है कि यह धर्म व्यवस्था है।

टोटमवाद को इसलिए धर्म व्यवस्था कहा जा सकता है कि इसमें शुद्धता और अशुद्धता की भावना मिलती है। यह धार्मिक अनुभूति का आधार है।

टोटमवाद में रहस्यमय शक्ति के प्रति श्रद्धा एवं विस्मय का भाव दीखता है। प्रत्येक टोटमी बलि-पशु को रहस्यमय शक्ति के रूप में मानता है। प्रत्येक टोटमी टोटम पशु पर भरोसा करता है तथा संकटकाल में संकट निवारण के लिए उनसे वह प्रार्थनाएँ भी करता है। रहस्यमय शक्ति के प्रति श्रद्धा, निर्भरता की भावना, प्रार्थना धार्मिक तत्व है। अत: टोटमवाद धर्म है। टोटमवाद को इसलिए भी धर्म कहा जा सकता है कि इसमें पाप के प्रति प्रायश्चित की भावना प्राप्त होती है।

टोटमवाद को धर्म में समाविष्ट करने का प्रधान कारण यह है कि टोटमवाद में बलि पशु अन्त में देवता का रूप ग्रहण करता है। सम्भवत: इसी कारण फ्रायड ने टोटमवाद से अनेकेश्वरवाद को विकसित माना है। उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि टोटमवाद समाज व्यवस्था एवं धर्म व्यवस्था दोनों है।

टोटमवाद उत्तरी अमेरिका, अफ्रिका तथा आस्ट्रेलिया में मुख्यत: प्रचलित है। टोटम धर्म से बलिदान की प्रथा का विकास हुआ है। इससे धार्मिक अनुभूति का विकास होता है। पाप के प्रायश्चित की भावना तथा अन्त:शुद्धि की धारणाएँ टोटमवाद से विकसित हुए हैं। फ्रायड के अनुसार टोटमवाद यहूदी-धर्म और ईसाई धर्म में दीखता है। हिन्दू धर्म में भी टोटमवाद की तरह पशुओं की आराधना का विषय माना जाता है।

Scanned with CamScanner